सुधा ओम ढींगरा

जीवन परिचय-
जन्म: 07 सितंबर 1959, जालंधर, पंजाब।
शिक्षा: पीएच.डी.
प्रकाशित कृतियां: कहानी संग्रह: कमरा नंबर 103, कौन सी ज़मीन अपनी, वसूली। **कविता संग्रह:** धूप से रूठी चांदनी, तलाश पहचान की, सफ़र यादों का। **कविता संग्रह (अमेरिका के कवियों का):** मेरा दावा है। **साक्षात्कार संग्रह:** वैश्विक रचनाकार: कुछ मुलभूत जिज्ञासाएं। **पंजाबी से अनुवादित हिन्दी उपन्यास:** परिक्रमा। **पंजाबी संस्मरण:** संदली बूआ। **काव्य सी.डी.:** मां ने कहा था। इसके अतिरिक्त 25 संग्रहों में कविताएं, कहानियां प्रकाशित।
संप्रति: उत्तरी अमेरिका की त्रैमासिक पत्रिका 'हिन्दी चेतना' की संपादक, विभूति ग्रुप की परामर्शदाता और ढींगरा फैमिली फ़ाउंडेशन की उपाध्यक्ष एवं सचिव।
sudhadrishti@gmail.com

मनप्रीत डर रही थी कि यदि वह कोर्ट में यह सच बता देगी कि उसकी जेठानी ने आत्महत्या नहीं की तो विदेश की धरती पर उसके पास कोई घर नहीं रहेगा और वह अपने देश भी नहीं लौट पाएगी। आखिर उसने क्या किया, झूठ बोलने में ही अपनी भलाई समझी या सच बोलने से अपने को रोक नहीं पाई?

अनुगूंज

मनप्रीत गहरी नींद में थी। 'तड़ाक' .... की आवाज़ के साथ ही उसे गुरमीत के रोने की आवाज आई। नींद में उसे वह आवाज़ कहीं दूर से आती महसूस हुई। 'गोरी चमड़ी की तो चूमा-चाटी होती है और मुझे थप्पड़ मारे जाते हैं। अगर मार्था के साथ ही रहना था, तो मुझ से शादी क्यों की? घर की नौकरानी बनकर मैं नहीं रहूंगी। मुझे तलाक चाहिए।' बिलख रही गुरमीत की आवाज लॉबी से आ रही थी। उसकी नींद टूट गई। उसने घड़ी में समय देखा। रात के तीन बजे थे। उसने पलंग पर करवट बदली, उसका पति पम्मी वहां नहीं था। वह अभी तक घर नहीं आया था। सुखबीर चिल्ला रहा था- 'इस घर में तलाक नहीं होते। तलाक तो तुम्हें कभी नहीं मिलेगा। तुम्हें इसी घर में जीना-मरना होगा। समझीं। किसी गलतफहमी में न रहना।'

गुरमीत उग्र हो गई- 'तलाक तो तेरा बाप भी देगा। मार्था के साथ ही रहना था तो मेरा जीवन क्यों बर्बाद किया। पांच सालों के एक-एक पल का हिसाब मैं कोर्ट में लूंगी।' ताबड़ तोड़ लात घूंसे गुरमीत को पड़ने लगे- 'हराम दी जनी बाऊ जी को बीच में क्यों घसीटती हो।'

बाऊ जी की बुलन्द आवाज गूंजी- 'भैण दी टकी को बहुत गर्मी चढ़ी हुई है, कर ठंडी इसको। हर दूसरे दिन तमाशा खड़ा करती है। सोने भी नहीं देती।'

'बाऊ जी मैं हमेशा के लिए इसे ठंडा करता हूं, आप सो जाएं।'

'गुरमीत चुप हो जा...इस समय बाप-बेटा शराब में धुत हैं, क्यों तुम इनसे अपनी हड्डियां तुड़वाती हो। मार्था से बीर का पल्ला मैं छुड़वाऊंगी। बस तुम थोड़ा सब्र रखो।' बीजी ने आवाज में मिश्री घोलकर कहा।

'पांच सालों से आपसे यही सुनती आ रही हूं, मेरे सब्र का बांध टूट चुका है। अब आप गिनवाएंगी, बेटी यह महलनुमा घर तेरा है, कार तेरे पास है, क्रेडिट काड्र्स तेरे पास हैं। दिन भर कहां जाती हो, कहां से आती हो, कोई नहीं पूछता। जो खिला देती हो खा लेते हैं, जब नहीं खिलाती तब भी कोई कुछ नहीं कहता। बीजी मुझे यह सब नहीं, पति चाहिए, जो पांच सालों में आप मुझे नहीं दे पाईं। अब तो मैं तलाक ही चाहती हूं। तोड़ लें जितनी हड्डियां तोड़नी हैं।'

तीन महीने पहले ही मनप्रीत शादी करके इस घर में आई। जेठ-जेठानी का झगड़ा हर दूसरी-तीसरी रात उसकी नींद तोड़ता। जिंदादिल जेठानी गुरमीत घर के वातवरण को बहुत खुशनुमा रखती और उसे छोटी बहनों की तरह प्यार करती। रात को पता नहीं उसे क्या हो जाता, पति की बेरुख़ी गुरमीत सह नहीं पाती।

पिछले कई दिनों से मनप्रीत अपने बारे में सोच रही थी। उसकी रातें भी तो गुरमीत की तरह ही बीतती हैं। उसका पति पम्मी शराब में टुन सुबह चार बजे से पहले कभी घर नहीं आता और आते ही शेखी बघारता- 'मन यार, पांच गैस स्टेशन, दस सबवे, पचास टैक्सियां, इतना बड़ा व्यापार संभालते-संभालते सुबह हो जाती है। आई होप यू अंडरस्टैंड...' और बिस्तर पर लुढ़कते ही शुरू हो जाते उसके खर्राटे, उसकी सांस के उतार-चढ़ाव के साथ बदबू के उठते भभके से मनप्रीत को कई बार मतली आई। विदेश में रहने वालों की वह जो कल्पना करती थी, इस घर में आने के बाद, टूटकर किरचों में बिखर गई। अंदर तक वह गहरे ज़ख्मी हुई। अमीर गंवारू उसने गांव में तो कई देखे थे। यहां इस देश में भी...।

उसने लाइट जलाई और कमरे से बाहर आ गई। उसका कमरा निचले हिस्से में, उसकी जेठानी का तीसरी मंजिल पर और बीच में पड़ती गोल सीढ़ियां इस तरह से बनाई गई थीं कि तीनों मंजिलों पर रहने वाले एक-दूसरे को देख सकें। तीसरी मंजिल की लॉबी में बीजी, बाऊजी, सुखबीर और गुरमीत खड़े झगड़ रहे थे। गुरमीत उसे देखते ही तीसरी मंजिल की रेलिंग पकड़ कर ज्वालामुखी-सी फट पड़ी- 'मनप्रीत तुम्हारा हाल भी मेरे जैसा होने वाला है। पम्मी इस समय सोफ़ी के घर पर है। इन्हें बहुएं नहीं, नौकरानियां चाहिए। बहुएं तो इनकी गोरियां हैं। नौकरानियां यहां महंगी पड़ती हैं। ये शादी की आड़ में हमें नौकरानियां बना कर लाए हैं।'

बीजी ने पीछे से उस पर धौल जमाई- 'चुपकर मरजानिये।' गुरमीत ने बड़ी मुश्किल से अपना संतुलन ठीक किया। इससे पहले कि वह बीजी की तरफ मुड़ती, हट्टे-कट्टे सुखबीर ने, छरहरी गुरमीत को उठाया और तीसरी मंजिल से नीचे फेंक दिया। लकड़ी के फ़र्श पर धड़ाम की आवाज और गुरमीत की दिल चीरती चीख निकली और पूरा घर कांप गया। मनप्रीत जड़वत हो गई।

बीजी ने दहाड़ मार कर कहा- 'हाय, सुखबीरे यह क्या किया।' और तेजी से नीचे की ओर भागी। बाऊजी ने पहला फोन एम्बुलेंस के लिए किया और दूसरा फोन पम्मी को। यह सब कुछ मिनटों में हुआ।

चित्रांकन : नरेंद्रपाल सिंह

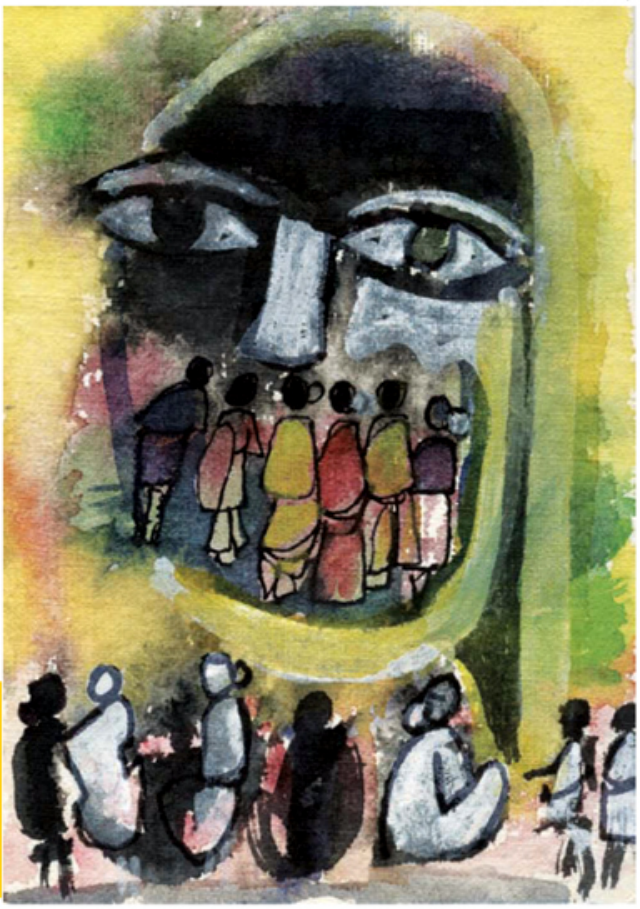

तभी पुलिस के सायरन की आवाज आई। पड़ोसन जिल वुलेन ने लड़ाई की आवाजें, चीख और धड़ाम की आवाज सुन कर पुलिस को फोन कर दिया था। आस-पास के घरों की बत्तियां जल गई थीं। लोग घरों से बाहर आ गए थे। डरी, सहमी मनप्रीत की सोचने-समझने की शक्ति ही नहीं रही। वह बस आवाजें सुन रही थी।

'गुरमीत तूने आत्महत्या क्यों की?' मैंने तुम्हें कितना समझाया था कि सब कुछ ठीक हो जाएगा। मैं सो रही थी..... तुमने छलांग लगा दी।' बीजी छाती पीट-पीट कर रो रही थीं।

गुरमीत सिर के बल गिरी और उसका सिर फट गया था। उसी पल उसके प्राण-पखेरू उड़ गए। एम्बुलेंस उसे ले गई और पुलिस अपनी कार्यवाही करने लगी।

जिल वुलेन गुरमीत की सहेली थी। वह गुरमीत के दुःख-सुख की साथी थी। उसने पुलिस को हर बात बताई, जो गुरमीत ने उसके साथ साझी की थी और अपनी शंका भी कि यह आत्महत्या नहीं हत्या है। पुलिस ने छानबीन के बाद सुखबीर और उसके मां-बाप को हिरासत में लेकर मुकदमा दायर कर दिया।

आज वह दिन है जब मनप्रीत की गवाही उन्हें बचा सकती है और वह खामोश है। उसके सामने जब भी कोई अकस्मात् घटना घटती है, बचपन से ही उसकी जीभ तालू के साथ चिपक जाती है। घटना की प्रत्यक्षदर्शी होते हुए भी वह बोल नहीं पाती और सही समय पर सच न बोल पाने के कारण बाद में वह स्वयं को कोसती रहती है। कई सच वह कह नहीं पाई और झूठ जीतता रहा है, उसका मलाल उसे अब तक है। बचपन की बातें तो बचपन के साथ ही चली गईं। आज जिस दुर्घटना की वह प्रत्यक्षदर्शी गवाह है, उससे पैदा हुए अंतर्द्वंद्व में घिरी हुई वह निढाल, परेशान है। उसकी मानसिक यातना दुर्घटना में जुड़े अपनों और रिश्तों को लेकर है। उसकी ज़ुबान खुल गई तो उसे इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी, परदेश में उसका घर छूट जाएगा और अगर नहीं बोली तो भी वह उस घर में जी नहीं पाएगी। दुर्घटना उसकी आंखों के सामने हुई है। वह क्या करे...इन परिस्थितियों में इस देश में कोई उसका मार्गदर्शन करने वाला नहीं। मार्गदर्शन करने वाली जेठानी तो यह दुनिया छोड़ कर जा चुकी है। वह उसकी बहुत अच्छी सहेली थी। उसी ने मनप्रीत को अनजाने देश को अपनाना सिखाया। वह अपने गांव में भी किसी को फ़ोन नहीं कर सकती। उससे मोबाइल फ़ोन ले लिया गया है। जिल उसे बार-बार कह चुकी है- 'मन, टेल्ल ट्रुथ। गॉड विल हेल्प यू।' वह जिल को कैसे समझाए कि सच बोल दिया तो देश लौटने के लिए पासपोर्ट कहां से लाएगी, वह भी सुसराल वालों के पास है। वापिस जाने के लिए टिकट कहां से खरीदेगी। उसे उनकी बात माननी पड़ेगी, वही कहना पड़ेगा, जो उसके सुसराल वालों का वकील चाहता है।

कोर्ट की कार्यवाही शुरू हो गई। जज अपनी कुर्सी पर आकर बैठ गया और ज्यूरी ने भी अपनी सीटें संभालीं। पुलिस और डॉक्टर की गवाही और उनके साथ वकीलों की प्रश्नोत्तरी शुरू हुई। उसकी बारी आने वाली है, बचाव पक्ष में उसकी गवाही बहुत महत्त्वपूर्ण है। वह बहुत नर्वस है। जब तक कोर्ट की कार्यवाही चल रही है, लॉबी में बैठी वह स्वयं को मजबूत कर रही है। उसके भीतर कृष्ण-अर्जुन संवाद चल रहा है। कृष्ण रिश्तों को किनारे रख सच बोलने के लिए कह रहे हैं। उसके भीतर बैठा अर्जुन रिश्तों को प्राथमिकता दे रहा है। रिश्तों के टूटने से डर रहा है। उहापोह की स्थिति में उसका सिर दुःख रहा है। पिछली कई रातों से वह सो नहीं पाई। पम्मी आजकल हर समय उसके साथ रहता है और बार-बार उसे वे वाक्य याद करवाता है, जो वकील उससे कोर्ट में कहलवाना चाहता है। पर उसे वही याद है, जो उसने देखा है। वह क्या करे, एक-एक क्षण उसकी आंखों के सामने घूम रहा है।

जज ने उनके वकील यानी बचाव पक्ष के वकील को अगली गवाही लाने के लिए कहा। वकील की असिस्टेंट पैटी कचहरी के कमरे से बाहर लॉबी में उसे लेने आई। उसका दिल जोरों से धड़कने लगा। उसे लगा कि उससे खड़ा भी नहीं हुआ जा रहा, पैटी ने उसे पकड़ा और कोर्ट के कटघरे तक ले आई। वहां उसे एक कुर्सी पर बिठा दिया गया और उसके सामने माइक था।

जज ने उससे बड़े प्यार से पूछ- 'आर यू कम्फर्टेबल।'

उसने 'हां' में सर हिलाया।

जज ने वकील की ओर देख कर कहा- 'यू मे प्रोसीड।'

बाइबल पर हाथ रख कर सच बोलने की कसम दिलवाई गई। वकील ने मनप्रीत को देखकर कहा- 'नाओ टेल देम व्हाट हैपन्ड दैट नाइट।'

मनप्रीत को महसूस हुआ कि उसकी सब इन्द्रियों ने काम करना बंद कर दिया है, बस उसका दिल धड़क रहा है, जिसकी आवाज वह सुन रही है और उसकी जीभ तालू के साथ चिपक गई है। उसका पति, सास, ससुर और जेठ सामने बैठे उसे घूर रहे हैं। उनके आगे कोर्ट की जमीन पर उसे गुरमीत की लाश पड़ी दिखाई दे रही है और उसकी बेबस खुली आंखें, जो उसने उस रात देखी थीं, उसी की ओर देख कर सच बोलने की गुहार लगा रही हैं। वह जमीन की ओर देखे जा रही है। वकील द्वारा पढ़ाए गए वाक्य सब भूल चुकी है। पूरे कोर्ट में सन्नाटा है और उसके बोलने का इंतजार हो रहा है। कई पलों तक वह ज़मीन की ओर ही तकती रही। लोगों की स्थिरता टूटने लगी। ज्यूरी ने पहलू बदलना शुरू कर दिया। जज ने स्थिति भांप ली। उसने बड़ी नम्रता से पूछा- 'ऑर यू ओके मैम।' उसे कुछ सुनाई नहीं दिया। उसे तो बस गुरमीत की वे आंखें ही दिखाई दे रही हैं, जिन्होंने उसके भीतर क्या फूंक दिया कि वह बोलने लगी और बोलती गई. . .सही और सच्ची घटना वर्णित कर ही रुकी और अंत में उसकी आंखों में बाढ़-सी आ गई। उसने अपने आपको संभालते हुए एक निवेदन पत्र जज साहब को आदर सहित प्रस्तुत किया जिसमें लिखा था कि सच बताने के बाद इस देश में अब उसके पास कोई घर नहीं रहेगा और अपने देश भी नहीं लौट सकती, क्योंकि उसका पासपोर्ट सुसराल वालों के पास है। उसकी मदद की जाए।

गवाही के बाद जिल ने उसे बांहों में भर लिया और उन दोनों को आभास हुआ कि गुरमीत भी उनसे लिपट गई है...।